1. शोधच्छात्रा– डॉ0 विनीता भन्डारी 2011
शोध शीर्षक–युधिष्ठिरविजयम् महाकाव्य का समालोचनात्मक अध्ययन
शोध निर्देशिका– प्रो0कमला चौहान
शोध केन्द्र– बिड़ला परिसर श्रीनगर–गढ़वाल(हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय श्रीनगर)

महाकवि वासुदेव द्वारा रचित युधिष्ठिरविजयम् महाकाव्यमानव मन में सदाचार के अकुरों को अंकुरित करता हुआ नैतिकता की उद्घोषणा करता हुआ सा प्रतीत होता है। कवि ने अपने महाकाव्य के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि अधर्म पराजय को प्राप्त कराने वाला है व धर्म उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला है। कवि ने पाण्डवों की विजय को प्रदर्शित कर काल चक्र को बलवान माना, यह काल चक्र ही मानव को कभी ग्रसित करता है तो कभी उल्लसित । धर्म का आश्रय लेकर मनुष्य इस कालचक्र को भेद कर आत्मज्ञानी बन जाता है यह महाकाव्य सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व करता है भारतीय अर्थनीति,राजनीति,धर्मनीति, आदि को अत्यन्त भव्यता से इस महाकाव्य में प्रस्तुत किया गया है। इसका मूल स्रोत महाभारत महाकाव्य है।

2. शोधच्छात्र – डॉ0 वासुदेव थपलियाल 2012
शोध शीर्षक–आचार्य गुणभद्र कृत् उत्तरपुराण का समालोचनात्मक अध्ययन 2012
शोध निर्देशिका– प्रो0कमला चौहान
शोध केन्द्र– बिड़ला परिसर श्रीनगर–गढ़वाल(हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय श्रीनगर)

आचार्य जिनसेन व आचार्य गुणभद्र का जैन संस्कृत काव्य परम्परा में विशिष्ट स्थान रहा हैंउनके द्वारा रचित महापुराण दो भागों में विभक्त है पूर्व भाग के कर्त्ता जिनसेन हैं यह भाग आदिपुराण कहा जाता है उत्तर भाग के कर्त्ता आचार्य गुणभद्र हैं इस भाग को उत्तरपुराण कहा गया है।आदिपुराण में आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का विशद वर्णन है तथा उत्तरपुराण में बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का वर्णन है।इसके अतिरिक्त इन पुराणों में अनेक दिव्य महापुरूषों का वर्णन भी हुआ है उत्तरपुराण के अड़सठवें पर्व में भगवान राम व लक्ष्मण को बलभद्र व नारायण के रूप में दर्शाया गया है कथा प्रसंगों के वर्णन के साथ जैन दर्शन के तत्वों की सूक्ष्म विवेचना का अध्ययन भी इन ग्रन्थों के आधार पर इस शोध प्रबन्ध में किया गया है।

3.शोधच्छात्र– डॉ0 चमनलाल सेमल्टी 2015
शोध शीर्षक–प्राचीन भारतीय शिक्षा ग्रन्थों में वर्णित शिक्षा तत्त्व (पाणिनीय शिक्षा के सन्दर्भ में)
शोध निर्देशिका– प्रो0कमला चौहान
शोध केन्द्र– बिड़ला परिसर श्रीनगर–गढ़वाल(हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय श्रीनगर)
षड् वेदाङ्गों में शिक्षा नामक वेदाङ्ग वेदों के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।शिक्षा वह वेदाङ्ग है जिसमें स्वर ,वर्ण ,मात्रा ,बल, प्रयत्न आदि विषयों का सूक्ष्म उपदेश किया गया है।वैदिक साहित्य के अध्ययन को सुगम बनाने के लिए शिक्षा ग्रन्थों के रूप में जिन पाणिनीय, याज्ञवलक्य,नारदीय आदि शिक्षा ग्रन्थों की रचना हुयी, उनमें पाणिनी की अष्टाध्यायी के समान ही पाणिनीय शिक्षा ग्रन्थ भी संस्कृत भाषा के वैज्ञानिक स्वरूप को प्रस्तुत करता है इस अध्ययन में इस गहन ज्ञान से युक्त सूक्ष्म ग्रन्थ को आधार बनाकर तथा वर्तमान संस्कृत भाषा शिक्षण की पद्धतियों का अध्ययन कर यह सिद्ध किया गया कि संस्कृत शिक्षण के लिए जो सुझाव पाणिनी द्वारा अपने समय में दिये गये ,भाषा शिक्षण हेतु वह आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने की उस काल में थे।

4. शोधच्छात्रा – डॉ0आभा

शोध शीर्षक– उपनिषदों में सामाजिक चेतना एक अध्ययन (शांकरभाष्य संवलित)2020

शोध निर्देशिका – प्रो0 कमला चौहान

शोध केन्द्र– बिड़ला परिसर श्रीनगर–गढ़वाल(हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय श्रीनगर)

यद्यपि उपनिषद् बह्मज्ञान का भन्डार हैं उपनिषदों का ज्ञान मोक्ष मार्ग को तो प्रशस्त करता ही है लेकिन उससे पहले मानव को जीवन जीने की कला सिखाता है।यह औपनिषदिक ज्ञान सैद्धान्तिक न होकर व्यवहारिक है उपनिषदों के अनेक रूचिकर आख्यानों से इस सूक्ष्म ज्ञान को दिया गया है। गुरू शिष्य को ऐसे कार्य में नियोजित करता है जिसे पूर्ण करके शिष्य व्यवहार द्वारा स्वतः ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इस अध्ययन द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि उपनिषदें हमें केवल ब्रह्मज्ञान ही नहीं देती अपितु सांसरिक सम्बन्धों का ज्ञान भी प्राप्त कराती हैं।पर्यावरण संरक्षण के निमित्त सचेत करती हैं।

5.शोधच्छात्र – डॉ0राजपाल सिंह 2017

नाट्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में नाट्यदर्पण का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक – डॉ0 आशुतोष गुप्त

शोध केन्द्र– बिड़ला परिसर श्रीनगर–गढ़वाल(हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय श्रीनगर)

"लोकसिद्धं भवेत्सिद्धं नाट्यं लोकात्मकं तथा " लोक व्यवहार का अनुकरण ही नाट्य कहलाता है मनुष्य की सुख–दुःख हर्ष–विषाद आदि मानसिक विकृतियों के भाव को नाट्य कहा गया है नाट्यदर्पण आचार्य रामचन्द्र गुणचन्द्र द्वारा रचित एक महनीय ग्रन्थ है जिसमें नाट्य तत्वों का सूक्ष्म विवेचन है नाट्यदर्पण मुख्यरूप से दशरूपक की प्रतिद्वन्दिता में रचित नाट्य ग्रन्थ है इसमें नाट्य तत्वों के लिए भरतमुनि का ही अनुकरण किया गया है

इस अध्ययन में नाट्यशास्त्र व नाट्यदर्पण की विषयवस्तु तथा इन दोनों में वर्णित तत्त्वों का साम्य वैषम्य बताया गया है। नाट्यदर्पण में अर्थ प्रकृति, कार्यावस्था एवं सन्धि, अभिनय एवं वृत्ति विवेचना को बतलाते हुए अन्त में नाट्यशास्त्र व नाट्यदर्पण में रस स्वरूप की विवेचना करते हुए उपर्युक्त ग्रन्थों में रस सम्बन्धी साम्य वैषम्य की चर्चा की गयी है। इस शोध में पुर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती नाट्याचार्यो के मतों की भी समालोचना की गयी है।

6.शोधच्छात्र – डॉ0सन्तोष लेखवार 2019

शोध शीर्षक –डॉ0 निरंज्जन मिश्र कृत गंगापुत्रावदानम् महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक – डॉ0 नरेन्द्र कुमार आर्य वेदालंकार

शोध केन्द्र–एस0आर0टी0परिसर टिहरी, हे0न0ब0ग0विश्वविद्यालय

गंगापुत्रावदानम् गंगा की अविरलता व पर्यावरण की रक्षा के निमित्त लिखा गया महाकाव्य है। यह महाकाव्य कवि डॉ0 निरंज्जन मिश्र की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा का परिचायक है। कवि की रचनाओं में मूलतः समाज में घटित घटनाओं का यथार्थ स्वरूप गुम्फित है यथार्थ की दृष्टि से यह महाकाव्य जितना प्रौढ़, मनोरंजक एवं विलक्षण है काव्यात्मक दृष्टि से भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के सन्दर्भ में पर्यावरण

के महत्त्व का भी उल्लेख है। जल जीवन है तथा प्रकृति इसकी संवाहक है। काव्यशास्त्रीय परम्परा में साहित्यशास्त्रोक्त लक्षणों के संदर्भ में महाकाव्य का साहित्यिक अनुशीलन किया गया है। गंगापुत्रावदानम् महाकाव्य में प्रयुक्त जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में उनका काव्यत्व गुण सर्वत्र ग्राह्य है कवि की रचना का मूल उद्देश्य समाज में मानव मूल्यों का स्थापन है ।

1. विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के शोध उपाधि प्राप्त शोधार्थीः

शोधच्छात्रा –डॉ0 ममता महेरा (2018)
शोध–शीर्षक– वाल्मीकीय रामायण में लोकव्यवहार (एक समीक्षात्मक अध्ययन)
शोध–निर्देशिका – डॉ० सविता भट्ट
शोध केन्द्र– डी0ए0वी0पी0जी0कालेज देहरादून
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वाल्मीकी रामायण में लोक व्यवहार एक समीक्षात्मक अध्ययन के अन्तर्गत लोकव्यवहार का स्वरूप, व मानव जीवन में लोकव्यवहार का महत्त्व बतलाते हुए वेदों में लोकव्यवहार की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है इसमें आदिकवि वाल्मीकी का व्यक्तित्व एवं रामायण महाकाव्य के प्रतिपाद्य विषय को प्रस्तुत करते हुए रामायण कालीन सामाजिक जीवन व लोक व्यवहार के विविध पक्षों को वर्णित किया है, तत्पश्चात् वाल्मीकीय रामायण में वर्णित सामाजिक व्यवहार ,राजनीतिक व्यवहार ,धार्मिक व आर्थिक व्यवहार को स्पष्ट करते हुए मानवेत्तर (यक्ष, किन्नर, गन्धर्व) जातियों के व्यवहार का भी अध्ययन किया गया है।

2.शोधच्छात्रा – कु0 डॉ0 प्रीति नेगी (2019)
शोध शीर्षक – महाभारत में कर्तव्यबोध (एक समीक्षात्मक अध्ययन)
शोध निर्देशिका – डॉ0 सविता भट्ट
शोध केन्द्र– डी0ए0वी0पी0जी0कालेज देहरादून
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत सर्वप्रथम कर्तव्य को पारिभाषित करते हुए मानव जीवन में इनकी उपयोगिता का वर्णन किया गया है, शोध प्रबन्ध के अन्त में धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष (पुरुषार्थ चतुष्ट्य) से सम्बन्धित मानव कर्तव्यों की विवेचना की गई है। कर्तव्य का आशय उन कार्यों से है जिन्हें करने के लिए व्यक्ति नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है महाभारत में अहिंसा को कर्तव्य बताया गया है किन्तु कर्तव्यों का स्वरूप देश काल तथा परिस्थितियों के आधार पर परिवर्तनशील है। उपर्युक्त शोध प्रबन्ध में महाभारत में कर्तव्यबोध के माध्यम से कर्तव्य के विविध पक्षों का अध्ययन किया गया है। मनुष्य के जीवन में कर्तव्यबोध का आदर्श उसकी स्वयं की चेतना का विकास है। सृजनात्मकता उसके भीतर ही है, महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर की थी। महाभारत में ऐसे आदर्श तथ्यों का उल्लेख मिलता है जिसमें राजा,प्रजा,सन्यासी,योगी, गृहस्थ आदि सभी को अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्रीय उन्नति में योगदान देने की प्रेरणा मिलती है।

3. शोधच्छात्रा – डॉ0बीना रानी 2020
शोध शीर्षक सरस्वती कण्ठाभरण का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक – डॉ0 विनोद कुमार गुप्त
शोध केन्द्र– राजकीय महाविद्यालय नई टिहरी

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्राचीन काव्यशास्त्रीय परम्परा का अवलोकन करते हुए सरस्वती कण्ठाभरण में वर्णित विषयों की पूर्ववर्ती एवं परवर्ती काव्यशास्त्रीय मतों से तुलना की गयी है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत अंलकार, रीति, औचित्य, वक्रोक्ति, ध्वनि नामक विभिन्न सम्प्रदायों के सम्यक विवेचन के क्रम में आचार्य भामह,रुद्रट आदि द्वारा अलंकारों वामनादि द्वारा रीतियों आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा औचित्य आचार्य कुन्तक द्वारा वक्रोक्ति आनन्दवर्धन द्वारा ध्वनि तथा भरत व्यासादि आचार्यों द्वारा रस सम्बन्धी काव्यशास्त्रीय मान्यताओं पर विचार किया गया है। शब्दालंकार, अर्थालंकार व उभयालंकार को स्पष्ट करते हुए अन्त में पूर्ववर्ती व परवर्ती आचार्यों के मतों का उल्लेख करते हुए सभी रसों की विवेचना की गई है।

आचार्य भरत से लेकर आधुनिक काव्याचार्यों पर्यन्त काव्य के अनिवार्य तत्त्वों यथा – काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन काव्यभेद, गुण–दोष अंलकार एवं रसस्वरूप आदि के परिवर्द्धन, संशोधन तथा आविष्करण की जो अविच्छिन्न परम्परा प्रवर्तमान है उसकी पूर्णतया समीक्षा का प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रयास किया गया है।

4. शोधच्छात्रा – डॉ0जय श्री 2020
शोध शीर्षक– भवभूति एवं शूद्रक के नाट्य प्रकरणों में वर्णित सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषणात्मक अध्ययन 2019
शोध निर्देशिका – डॉ0 सुनीता कुमारी
शोध केन्द्र– बी0एस0एम0 कालेज रूड़की

संस्कृत नाट्य साहित्य में भवभूति व शूद्रक दोनों का अपना विशिष्ट स्थान है । समाज व साहित्य एक दूसरे के पूरक हैं। कवि की रचना सामाजिक मूल्यों की संवाहक एवं नैतिकता की संरक्षक होती है। भवभूति एवं शूद्रक की वैयक्तिक एवं सामाजिक चेतना, नैतिक एवं दार्शनिक चेतना के विवेचन को करते हुये अन्त में आध्यात्मिक चेतना तथा दोनों नाटककारों के नाट्यों की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समीक्षा की गयी है। भवभूति सीता निर्वासन की पीड़ा को राम के आत्मनिर्वासन की गहनतर पीड़ा में अन्तरित का उनके राजधर्म और मनुष्य धर्म के बीच के तीक्ष्ण अन्तर्द्वन्द को जिस सूक्ष्मता से रूपायित किया है,वह अद्वितीय है। शूद्रक का मृच्छकटिक सांस्कृतिक परम्परा को अपने में आत्मसात किये हुये अनूठी रचना है। चोर शर्विलक के अनुसार किसी के आगे हाथ जोड़ने से अच्छा तो स्वतन्त्र रू‍प से किया जाने वाला चोर का कृत्य है इस प्रकार की अनेक लोक जीवन से सम्बद्ध यथार्थ घटनाओं का चित्रण ही मृच्छकटिक की विषय वस्तु है गरीबी या दरिद्रता मनुष्य का सबसे बड़ा पाप या अपराध हैं। इन्ही सामाजिक विकृतियों के माध्यम से मानव की वेदना को प्रकट करता मृच्छकटिक प्रकरण है।

5. शोध शीर्षक–संस्कृत वाङ्मय में वर्णित शाप वरदान व्यवस्था का परिशीलन 2020
शोधच्छात्र– डॉ0 सुनील गौड़
शोध निर्देशिक–प्रो0 शिवशंकर मिश्र
शोध केन्द्र– राजकीय महाविद्यालय कोटद्वार

वैदिक व पौराणिक साहित्य में शाप व वरदान के अनेकों प्रसंग वर्णित है। शाप एवं वरदान इस दण्ड–व्यवस्था का प्रारम्भ बहुत पहले हो चुका था।। इसके संकेत ऋग्वेद में प्राप्त होते हैं पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार कम से कम आठ हजार वर्ष पूर्व ऋग्वेद की रचना हो चुकी थी ऋग्वेद में भी राजतन्त्र का वर्णन मिलता है

जिसमें दण्ड व्यवस्था के विधान के स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं। पुराण साहित्य,रामायण,महाभारत ,स्मृतियों आदि में वर्णित प्रसंगों के आधार पर यह स्पष्ट किया गया है कि इस व्यवस्था का उदृेश्य क्या था और क्या ये व्यवस्था कल्याण के निमित्त थी ।